JANUARY TO MARCH E-MAGAZINE 2024-2025
BY HINDI DEPARTMENT

MRS. ANKUSH SHARMA
MRS. GEETU MEHRA

ज्ञानदीपक

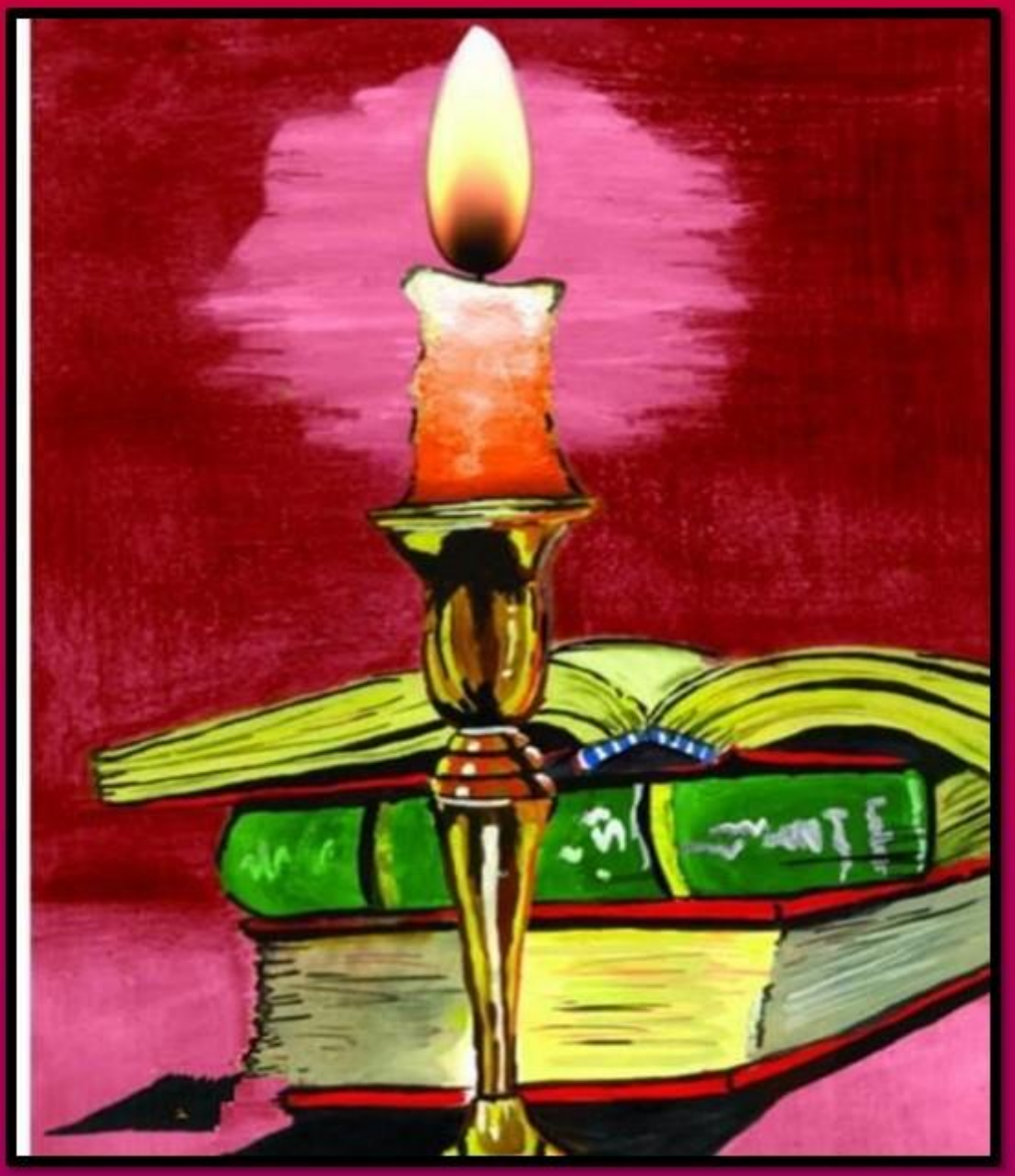

BCM ARYA SCHOOL

SINGLA-ENCLAVE, LALTON-DOLON KHURD, LUDHIANA

EDITORIAL BOARD

Chief Patron
Mrs. Kritika Seth (Principal)

EDITORIAL

- **Editor in Chief - Mrs. Ankush Sharma**
- **Advisor - Mrs. Geetu Mehra**

संपादक की कलम से

बी.सी.एम.आर्य स्कूल ,सिंगला -एन्क्लेव ,ललतों की ई - पत्रिका के अगले संस्करण में आपका स्वागत है | हम हर्षोल्लस के साथ यह ई - संस्करण ला रहे हैं। इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की सृजनात्मक और रचनात्मक प्रवृत्ति को उजागर करने का प्रयास किया गया है और विद्यार्थियों ने भी इस अवसर का बखूबी फायदा उठाया है। हम आशा करते हैं कि हमारा और विद्यार्थियों का यह प्रयास पाठकों को अवश्य पसंद आएगा और यह संस्करण आपके मन में अपने शब्दों और मौलिकता की गहरी छाप छोड़ जाएगाा।

अंकुश शर्मा

आज ही क्यों नहीं ?

एक बार की बात है एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता था | गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था | सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था | अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य अपने जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये | आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है | ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है | वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है,तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता | यहाँ तक कि वह अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है | उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बनाई | एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा –"मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ | जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी | पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लुगा |"शिष्य इस सुअवसर को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी,समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा | फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा,उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है | उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा | उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा. दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा की अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा. उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा परन्तु भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी , और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा. पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नीद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था. अब वह जल्दी-जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर-चूर हो गया | पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी: उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा.

अतः जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं , पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं. इसलिए मैं यही कहना चाहता हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम,और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये – "आज ही क्यों नहीं ?

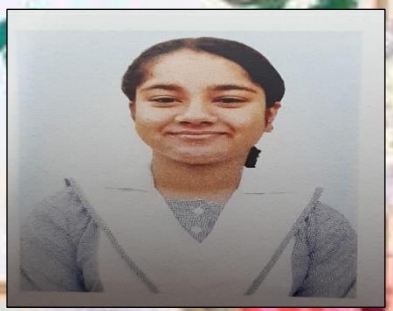

नाम- सताक्षी

वर्ग पहेली- 4

वर्ग पहेली से सही शब्द ढूँढो –

(क) जहाँ फूल खिलते हैं

(ख) आसमान में चमकती है

(ग) खुशबू देते हैं

(घ) जहाँ पानी का संग्रह होता है

वा	टि	का	ज
दा	म	ल	ला
पु	मि	ह	श
ष्प	ज	नी	य

वर्ग पहेली 3 का उत्तर

(क) वाटिका (ख) दामिनी (ग) पुष्प (घ) जलाशय

अहाना धीर

उत्तर -पहेली के अगले संस्करण में

जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती मुन्नी देवी था। उनके पिता का नाम बाबू देवी प्रसाद था। वह अपने भाई बहन में सबसे छोटे थे। वह अपने माता-पिता की आठवीं संतान थे। उनका परिवार पूरे बनारस में प्रतिष्ठित परिवारों में से एक गिना जाता था। जब वह मात्र 16 साल के थे तो उनकी माता और बड़े भाई का निधन हो गया था।उनका विवाह 1906 में विंध्यवाटिनी से हुआ था। जयशंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाएं है- झरना, ऑसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य) स्कंदगुप्त चंद्रगुप्त, पुवस्वामिनी जन्मेजय का नागयज्ञ राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र प्रायश्चित सज्जन (नाटक) छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी।जयशंकर प्रसाद को 'कामायनी' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ।जयशंकर प्रसाद जी का देहान्त 15 नवम्बर, सन् 1937 ई. में हो गया।

हिंदी

हिन्दी है
भारत का मान, हम
सबकी है हिन्दी शान।
हिन्दी में है कृष्ण
समाया, मैं हूँ
हिन्दी मेरी
ही बोली में उसने
जग को नचाया ।।
इतिहास को अपने शब्दों में है
मैंने समाया, ऋषि मुनियों, कवियों
ने मेरी बोली में गुण गाया।
सभी बोलियाँ हैं मोती सी पिरोती उनको मैं एक माला,
दूरे हैं हम एक दूजे बिन इतना है बस प्यार हमारा ।।
सीधी सी बोली हूँ हिन्दी जादू मेरा दूर तक छाया,
बाहर से आते हैं गौरे सुनने मेरी
एतिहासिक माया।
मैं ही हूँ जो समझूँ सबको,
सबकी उलझन सुलझा दूँ मैं
मैं ही हूँ जो बाँधू सबको।

प्रेम का मतलब समझा दूँ मैं।

गर्व है मुझको मैं हिन्दी हूँ,
भारत के मस्तक की मैं
बिन्दी हूँ।

हिंदी दिवस

- हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किए जाने के उपलक्ष्य में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है |
- 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया।
- हिंदी दिवस पर कवि सम्मलेन, विचार-संगोष्ठी व वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताएँ होती हैं
- इस दिन हिंदी भाषा के विकास में योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिए जाते हैं।
- हिंदी भारत में बोली जाने वाली सबसे अधिक प्रचलित और आसन भाषा है ।
- विश्वभर में लगभग 70 करोड़ लोग हिंदी भाषा बोलते हैं।
- दक्षिण प्रशांत महासागर में स्थित एक द्वीपीय देश फ़िजी की राजभाषा हिंदी ही है।
- हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने की बात सर्वप्रथम 1918 के हिंदी साहित्य सम्मलेन में गांधी जी ने की थी।
- गांधी जी ने कहा था कि 'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी का प्रयोग देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।'

गुरमन